7. मुक्तकाव्य के स्वरूप की दृष्टि से लज्जावग्ग का महत्व निर्धारित कीजिए।

8. उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर अनासक्त व्यक्ति के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

9. दशवैकालिक के आधार कारुण्य भाव का विवेचन कीजिए।

खण्ड—स **2×20=40**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

10. आचारांग के आधार पर जीवन के सार का वर्णन कीजिए।

11. लज्जावग्ग में उल्लेखित जीवनमूल्यों का वर्णन कीजिए।

12. अष्टपाहुड में उल्लेखित आठ पाहुडों का विवेचन कीजिए।

13. सुसुरगेहवासीणं चउजामायराणं कहा के आधार पर दामादों के आधार पर आसक्ति के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

CPL–02

June – Examination 2023

Certificate in Prakrit Language

प्राकृत गद्य एवं पद्य

Paper : CPL-02

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **10×2=20**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. (i) समणसुत्त में कुल कितने प्रकरण हैं ?

   (ii) आगम किसे कहते हैं ?

   (iii) अर्धमागधी प्राकृत के साहित्य को कितने भागों में विभक्त किया गया है ? नाम लिखिए।

(iv) लज्जावग्ग किनकी रचना है?

(v) मुनि कस्तुरिविजय कृत प्राकृत रचना का नामोल्लेख कीजिए।

(vi) प्राकृत ऐतिहासिक महाकाव्य का नाम लिखिए।

(vii) भगवती आराधना में किसके सिद्धान्तों का वर्णन है ?

(viii) चारित्रपाहुड में कुल कितनी गाथाएँ हैं ?

(ix) रोहिणीकथा का उपजीव्य क्या है ?

(x) पाइएविण्णाण कहा के प्रणेता कौन हैं ?

खण्ड—ब **4×10=40**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

2. समणसुत्त के अनुसार श्रावक जीवनचर्या का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

3. उत्तराध्ययनसूत्र के आधार पर जीवन की क्षणभंगुरता पर प्रकाश डालिए।

4. अधोलिखित गाथाओं में से किसी **एक** गाथा की सप्रसंग एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी सहित व्याख्या कीजिए :

जा जा वज्जई रयणी, न सा पडिनियत्तई।

अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जन्ति राइओ॥

अथवा

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जउं।

तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं॥

5. रोहिणीज्ञात एक विशुद्ध लौकिक कथा है। इस तथ्य का वर्णन कीजिए।

6. अधोलिखित कथाओं में से किसी **एक** कथा की सप्रसंग एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी सहित व्याख्या कीजिए :

'तुब्भे णं देवाणुप्पिया! एए पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता पढमपाउसंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह, करित्ता इमे पंच सालिअक्खए वावेह। वावेत्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेणं संवड्ढेह।'

अथवा

तया सो इंददत्तो वि सपुत्तो तत्थ समागओ। तं गणेसपडिमं दट्ठूणं पुत्तं कहेइ—"हे पुत्त् एसच्चिय सिप्पकला कहिज्जइ। केरिसी पडिमा निम्नविआ, इमाए निम्मावगो खलु धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि। पासेसु, कत्थ वि भुल्लं खुण्णं च अत्थि ? जइ तुमं एआरिसी पडिमं निम्नवेज्ज, तया ते सिप्पकलं पसंसेमि, नन्नहा।"